

27. सेवा-सुश्रूषा की प्रतिमूर्ति-कस्तूरबा गाँधी

- महेन्द्र सागर प्रचंडिया



जन-सेवा और सुश्रूषा की जब और यहाँ चर्चा की जाती है, कस्तूरबा गांधी और मोहनदास करमचन्द गाँधी का नाम बड़े आदर के साथ स्मरण किया जाता है। जन-जागरण और जन-सेवा के आधार पर पूरा देश उन्हें 'बा' और 'बापू' के रूप में सम्बोधित कर अपनी श्रद्धा और आत्मीयता अभिव्यक्त करता है।

तत्कालीन भारतीय महिला-समाज घर की चारदीवारी में रहकर घरेलू काम-काज सम्पन्न करने में अपने कर्तव्य की इतिश्री समझता था। उस समय कस्तूरबा गांधी ने महिला समुदाय और समाज में उल्लेखनीय जागृति उत्पन्न की। उनमें राष्ट्रीयता की अलख जगाई। फलस्वरूप, उसने घर से बाहर निकलकर आज़ादी के महायज्ञ में अपना महार्घ चढ़ाने का मांगलिक संकल्प किया। इस प्रकार बा का व्यक्तित्व और कृतित्व वस्तुतः मानवीय सेवा और समर्पण का श्रीमद्भागवत बन गया जिसके सत स्वाध्याय की आज भी प्रासंगिकता है। यहां उनके जीवन से सम्बन्धित कतिपय प्रेरक प्रसंगों और सुधी सन्दर्भों को अपनी चर्चा का विषय बनाना वस्तुतः हमारा मूल अभिप्राय है।

काठियावाड़ के पोरबन्दर नगर में सन् 1869 के अप्रैल महीने में कस्तूरबा का जन्म हुआ। इनके पिता थे श्री गोकुलदास मकनजी और माता का नाम ब्रजकुँवरी था। कस्तूरबा अपनी बाल्यावस्था में बिल्कुल निरक्षर रहीं, क्योंकि उस समय बालिकाओं को शिक्षा के क्षेत्र में दीक्षित कराने का प्रचलन नहीं था। गृहकार्य में अनेक उत्तम गुणों को जगाकर आपने निपुणता प्राप्त की थी।

पोरबन्दर राज्य की दीवानगिरी करने वाले गांधी-परिवार के साढ़े छः वर्षीय बालक मोहनदास के साथ कस्तूरबा का वाग्दान-संस्कार सम्पन्न किया गया। तेरह वर्ष की आयु में वे वैवाहिक संस्कार में दीक्षित हो गये। कस्तूरबा अपने पति से छः महीने बड़ी थीं।

पति-पत्नी के महत्त्व को जाने बिना उन्होंने अपने गृहस्थ-जीवन का श्रीगणेश किया। कस्तूरबा गांधी ने अपने पति का नाहक और निरर्थक नियंत्रण कभी स्वीकार नहीं किया, तथापि उन्होंने अपने पति की गरिमा को कभी गिरने नहीं दिया। परिवार के पोषण और परिवार के बाहरी व्यवहार में अपने पति की महत्ता में वृद्धि की। गांधी जी ने स्वयं स्वीकार किया कि जैसे-जैसे वे बा के सच्चे गुणों को समझते गये, वैसे-वैसे अपने गृहस्थ जीवन को धन्य बनाते गये और बापू सच्चे 'बापू' बने। उन्होंने कस्तूरबा को सफल गृहस्थी की स्थापना में सहयोग देकर घर के भीतर और घर

के बाहर 'बा' की गरिमा से गौरवान्वित किया। इस विभूतिमय दम्पति के जीवन का रहस्य ही यह रहा है कि दोनों ने एक-दूसरे को ऊपर उठाया और महान बनाया।

बात तब की है जब बापू डरबन में वकालत करते थे। उनके मकान में नाली न होने से पेशाब का बर्तन हर कमरे में रखा जाता था। उसके उठाने और बाहर फेंकने का काम नौकर नहीं, अपितु बापू और बा मिलकर किया करते थे। बा को पंचम कुलोत्पन्न कारकुन का पेशाब का बर्तन उठाना सह्य नहीं था। गांधी जी उसे उठाये, बा को यह भी गवारा नहीं था अनमनी आँसू भरी आँखों से गांधी की ओर देखती हुई बा ने पेशाब का बर्तन उठाया तो गांधी जी को यह अच्छा नहीं लगा। वे चाहते थे कि यह काम प्रसन्नतापूर्वक किया जाये। बापू ने बा को ऊँचे स्वर में कहा, “देखो, यह बखेड़ा मेरे घर में नहीं चलेगा।” कस्तूरबा को गांधी जी की बात चुभ गई और भरे दिल से बोली “तो संभालो अपना घर, मैं चली।” गांधी जी बा का हाथ पकड़कर दरवाजे तक खींच लाये और आधा दरवाजा खोल दिया। यह देख आँसुओं की बरसात करती हुई बा ने कहा, “तुम्हें तो शर्म नहीं, पर मुझे है। मैं स्त्री होकर बाहर कहाँ जाऊँगी ? यहाँ मेरे माता-पिता भी नहीं हैं। विवश, मुझे तुम्हारी शर्त स्वीकार करनी होगी। शर्म कीजिये और दरवाजा बन्द कर लीजिये, कोई देखेगा तो फजीता होगा।” कस्तूरबा के भारी-भरकम निर्णय को सुनकर बापू लज्जित हुए और दरवाजा बन्द कर लिया।

जब बापू दक्षिण अफ्रीका से लौटने लगे तो वहाँ के भारतीय मित्रों ने उन्हें मूल्यवान वस्तुएँ भेंट की। पचास गिन्नी के मूल्य का एक हार कस्तूरबा को भी भेंट किया गया। सेवा का पारिश्रमिक लेना गांधी जी को स्वीकार नहीं था। अतः उन्होंने कीमती उपहारों और आभूषणों का एक ट्रस्ट स्थिर किया, विधान बनाया गया। अपने अनुकूल बनाने में महिलाओं का आभूषण के प्रति मोह-मनोविज्ञान आड़े हाथों आ रहा था। अन्ततः जब बा के सामने आभूषण लौटाने की बात आयी तो वे बिफर पड़ीं। बा ने बापू से गृहणी की भाषा में कहा, “तुम्हें और तुम्हारे लड़कों को चाहे इन आभूषणों की ज़रूरत न हो, मैं भी भले ही न पहनूँ पर मेरी बहुओं का क्या होगा ? ये उनके आड़े वक्त में काम आयेंगे, यह तुम्हें कैसे समझाया जाये।” कहते-कहते बा की आँखों से आंसुओं की बरसात होने लगी। मीठा-कड़वा बहुत लम्बा विवाद हुआ और अन्ततः बा को गहने लौटाकर बापू की सार्वजनिक उपयोगी योजना को मूर्तरूप देने का पुन्यार्जन करना पड़ा।

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के समय गांधी जी ने बा को छोड़कर अन्य अनेक मित्रों से जेल के लिए पूछा, तो वे सभी तैयार हो गए। जब कस्तूरबा को यह बात विदित हुई तो उन्होंने बापू से कहा, “मुझे दुःख है कि आप मुझसे इस विषय में कोई बातचीत नहीं करते। आखिर मुझमें ऐसी कौन-सी कमी है जो मैं जेल न जा सकूँगी ? मैं भी तो उसी पथ चलना चाहती हूँ जिसके लिए आप इन बहनों को सलाह दे रहे हैं।”

गांधी जी को आशंका थी कि कहीं जेल की यातनाएँ उन्हें वापस लौटने के लिए बाध्य न करें, किन्तु बा के आग्रह और उत्सर्ग करने के दृढ़ निश्चय के आगे उन्हें जेल जाने से रोका नहीं जा

सका। वे अनेक बार जेल गईं। जब वे पहली बार जेल गईं तब वहाँ उन्हें बेहद कष्ट भोगने पड़े। कस्तूरबा ने अन्य सभी कष्ट सहन कर लिये, पर व्रतविहीन भोजन करना उन्हें स्वीकार नहीं हुआ। अपने व्यय पर जेल से बाहर के भोजन की उन्हें अनुमति नहीं दी गई। इस प्रकार जब कस्तूरबा जेल से छूटकर बाहर आईं तो उनका शरीर सूखे पेड़ की तरह हड्डियों का ढांचा भर रह गया था।

एक बार बा रक्तस्राव से पीड़ित हो गईं। उपचार और आपरेशन से भी जब उन्हें रोग से छुटकारा नहीं मिला तो बापू ने कहा, “तुम दाल और नमक खाना छोड़ दो।” नमक विहीन भोजन विशेष आग्रह करने पर बा ने उनसे कहा, “दाल और नमक को कोई तुमसे भी छोड़ने को कहे तो तुम भी नहीं छोड़ सकते।”

“मुझे रोग हो और वैद्य का निर्देश हो तो मुझे उसका पालन करने में कोई दिक्कत नहीं। फिर भी, लो, तुम छोड़ो या न छोड़ो, पर मैंने एक वर्ष के लिए नमक और दाल का सेवन अभी, इसी समय से त्याग दिया है।” गांधी जी ने दृढ़तापूर्वक कहा।

इस निर्णय ने बा को पश्चाताप करने के लिए विवश कर दिया। बा ने कहा, “मेरी मति मारी गई, तुम्हारा स्वभाव जानते हुए भी मैंने हठ ठान ली। अब तो मैं दाल और नमक नहीं खाऊँगी, पर तुम अपनी बात लौटा लो, नहीं तो यह मेरे लिए बड़ी भारी सज़ा हो जाएगी।”

बापू ने कहा, “तुम नमक और दाल छोड़ दोगी तो यह बहुत ही अच्छा होगा। उससे तुम्हें अवश्य लाभ होगा, परन्तु मैं ली हुई प्रतिज्ञा को नहीं लौटा सकता। आदमी किसी भी बहाने से संयम पाले, उसे लाभ ही होता है। कस्तूरबा की आँखों से अश्रुधारा बह उठी, “तुम बड़े हठी हो, किसी की बात मानते ही नहीं।” इस घटना से उनकी चर्या सत्याग्रह से सम्पृक्त हो उठी। कस्तूरबा का स्वास्थ्य सुधरने लगा।

बा का जीवन वैष्णवी संस्कारों से अनुप्राणित था। उसमें परिष्कार और विस्तार बाद में हुआ। अहमदाबाद के सत्याग्रह आश्रम में बापू ने कहा, “अगर कोई लायक, अच्छूत और कमजोर भाई आश्रम में भर्ती होना चाहेगा तो मैं उसे जरूर भर्ती करूँगा।” संयोग से दूधा भाई उनकी पत्नी दानी बेन और एक छोटी लड़की लक्ष्मी आश्रम में आ पहुँचे। उनके आने से आश्रम में खलबली मच गयी।

बा ने अपनी सूझ-बूझ से सब सँभाल लिया। उन्होंने इस छोटे-से परिवार को बड़ी आत्मीयतापूर्वक सहेजा और उनमें विशेषकर खान-पान में सफाई और शुद्धता के संस्कारों को जगाने का प्रयास किया।

कुछ समय के बाद दूधा भाई और दानी बेन बापू से अनुमति लेकर आश्रम से चले गए, किन्तु बेटा लक्ष्मी को आश्रम में छोड़ गये। लक्ष्मी का बा द्वारा बड़ी आत्मीयतापूर्वक पोषण हुआ।

यदि लक्ष्मी ने कभी कोई झगड़ा करके बा को परेशान भी किया तो बा ने बिना कोई दुःख पहुँचाये उसे समझाया और नेक बनाया। इस प्रकार बा न केवल लक्ष्मी की माँ बनी, अपितु वे सारे देश की माँ बन गयीं। उनके दिल में कभी कोई कौमी भेदभाव था ही नहीं। सचमुच वात्सल्य की मूर्ति थीं बा।

बा का उत्तरोत्तर अध्यात्म की ओर झुकाव बढ़ता गया। जीवन के अन्तिम दिनों में उन्हें ऐसा आभास होने लगा था कि उनकी मौत अब निकट है।

आगाखाँ महल में महादेव देसाई दिवंगत हुए तो बा ने विलाप करते हुए कहा, “मुझे जाना था, फिर महादेव क्यों चला गया ?” जब बापू ने आगाखाँ महल में उपवास किया तो उनका शरीर गिरने लगा। मिलने वालों के सामने बा कहने लगी, “मैं बापू से पहले जाऊँगी। बापू जरूर उठ बैठेंगे। यह तो महादेव का मंदिर है। जिस रास्ते महादेव गये, उसी रास्ते मैं भी जाऊँगी।”

सन् 1944 की 22 फरवरी को सांयकाल ठीक 6 बजकर 35 मिनट पर बापू की गोद में लेट कर बा कहने लगीं, “मैं अब जाती हूँ। हमने बहुत सुख भोगे और दुःख भी। मेरे बाद रोना मत, मेरे मरने पर मिठाई खानी चाहिए।” बा के प्राण बापू की गोद में ही निकल गये।

बा के जीवन से अनुभूत होता है कि नारीत्व में कितना गौरव और कितना वैभव होता है। कितनी विविधता, कितनी तेजस्विता, कितना धैर्य, कितनी श्रद्धा और शक्ति का अद्भुत समन्वय बा में रहा है। मानव प्रेम और सेवा की प्रतिमूर्ति बा सचमुच मर कर अमर हो गईं।

अभ्यास

1. कस्तूरबा गांधी ने महिला समुदाय में कैसी जागृति उत्पन्न की ?
2. कस्तूरबा गांधी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
3. महात्मा गांधी ‘सच्चे बापू’ कैसे बने ?
4. कस्तूरबा ने जेल में कैसा जीवन व्यतीत किया ?
5. कस्तूरबा ने अपने प्राण कब और किस समय छोड़े ?
6. प्राण छोड़ते समय उन्होंने क्या कहा ?

